जिआर्डिएसिस (Giardiasis) क्या होती है ?

Dr. Arvind J. Bhatt

छोटी आंत द्वारा एक प्रोटोजोआ की वजह से एक संक्रमण है। यह मनुष्यों में आमतौर पर से दूषित पानी पीने की वजह से होता है सबसे अधिक गंदा हाथ एक संक्रमित व्यक्ति के द्वारा या संक्रमित कुत्तों और बीवर जैसे जानवरों के मल से प्रदूषित भूजल पीने द्वारा दूषित भोजन खाने से (इसलिए उपनाम 'भुसने बुखार')

जिआर्डिएसिस के लक्षण क्या हैं?

1. दस्त Diarrhoe
2. पेट में मरोड Abdominal cramps
3. भूख में कमी Loss of appetite
4. बदबू के साथ गैस Foul&smelling flatulence and belching
5. मतली Nausea (feeling sick)
6. खट्टी डकार Indigestion
7. कुपोषण के कारण वजन घटना Weight loss caused by malnutrition
8. थकावट (अत्यधिक थकान) Fatigue (extreme tiredness)
9. निर्जलीकरण Dehydration
10. सूजन Bloating

इससे उल्टी और हल्का बुखार (98.6–100.4एफ) भी हो सकता है, गेयार्डियासिस आमतौर पर स्वास्थ्य के लिए गंभीर खतरा नहीं है और इसका आसानी से इलाज किया जा सकता है।

डॉक्टर को कब दिखाएँ?

यदि आपको दस्त, ऐंठन, सूजन और मतली के लक्षण हैं जो एक हफ्ते से अधिक समय तक मौजूद हैं तो डॉक्टर से मिलें।

अगर बच्चे को दस्त दो से तीन दिन तक रहता है, या पिछले 24 घंटों में उसे दस्त छः या अधिक हुए, तो डॉक्टर से संपर्क करें।

जिआर्डिएसिस किसे फैलता है?

अधिकांश लोग जिआर्डियासिस से जिआर्डिया परजीवी के साथ दूषित पानी पीने से या संक्रमित व्यक्ति के साथ सीधे संपर्क के माध्यम से संक्रमित हो जाते हैं।

अगर संक्रमित व्यक्ति शौचालय का उपयोग करने के बाद अपने हाथ ठीक नहीं धोता है, तो दूसरा द्वारा खाया जाने भोजन संभालता है तो यह रोग को दूसरों तक पहुंचा देगा। अगर यह संक्रमित पानी से धोया जाता है तो भोजन दूषित हो सकता है और खाने पर परजीवी से संक्रमित कर सकता है।

जिआर्डिएसिस किसे प्रभावित करता है?

दुनिया में लगभग हर जगह होता है, लेकिन विशेष रूप से वहां व्यापक है जहां साफ पानी कम उपलब्ध है और स्वच्छता खराब है।

यह सभी उम्र के लोगों को प्रभावित कर सकता है लेकिन यह छोटे बच्चों और उनके माता-पिता में सबसे आम है।

दवाओं के साथ निम्न का ध्यान रखें–

• पानी की कमी न होने दे।
• ठण्डा पानी नहीं पिये।
• थोड़ी-थोड़ी देर पर पानी पीते रहे।
• नारियल पानी पियें।
• खाने मे पतली मूंग दाल की खिचड़ी खाए इसमे पकाते समय कुछ लहसुन डाल दे और बनने के बाद अच्छे से अजवाइन और लहसुन का तड़का लगाये।

जिआर्डिएसिस ग्तमअमदजपवद से कैसे बचा जाए?

1. बाहर यदि पानी पीना हो तो बोतलबंद पानी ही पियें।
2. सडक किनारे मिलने वाले भोजन, चाटपकौड़े आदि न खाएं।
3. गन्दा पानी न पियें।
4. पब्लिक टॉयलेट को इस्तेमाल करने के बाद हाथों को अच्छे से धोएं।
5. खाना खाने से पहले और बाद में हाथों को अच्छे से धोना न भूलें।
6. ट्रेवल करते समय कोशिश करें कि घर का बना खांना ही खाएं।
7. अच्छे हाइजीन, साफ़ पानी और खाने से पेट की बीमारियों से बचा जा सकता है

हेपेटाइटिस–बी दबे पॉव आनेवाला कातिल–

मैं 27 साल का था और मेरी नयी–नयी शादी हुई थी। मैं बहुत ही चुस्त–दुरुस्त था। मैं एक ऐसी नौकरी करता था जिसमें मेरा ढेर सारा वक्त और ताकत लग जाती थी। साथ ही, मैं यहोवा के साक्षियों की मंडली में कई ज़िम्मेदारियाँ भी सँभालता था। लेकिन मैं बेखबर था कि मुझे हेपेटाइटिस–बी है जो मेरे कलेजे को नुकसान पहुँचा रहा था।" हमारा कलेजा शरीर का एक सबसे ज़रूरी अंग है। यह खून को छानकर उसमें मौजूद ज़हर को अलग करता है, साथ ही करीब 500 दूसरे ज़रूरी काम भी करता है। इसलिए हेपेटाइटिस (कलेजे में सूजन) होने पर एक इंसान की सेहत पूरी तरह बिगड़ जाती है। हद–से–ज़्यादा शराब पीने या जानलेवा पदार्थ लेने से भी हेपेटाइटिस हो सकता है। लेकिन ज़्यादातर यह बीमारी वायरस से होती है। वैज्ञानिकों ने ऐसे पाँच वायरस का पता लगाया है जो इस बीमारी के लिए जिम्मेदार हैं। और उनका मानना है कि तीन और वायरस भी हैं, जिनसे यह बीमारी हो सकती है।

हेपेटाइटिस–बी कैसे हुआ?"

"तीस साल की उम्र में मुझमें इस बीमारी के लक्षण नज़र आने लगे। एक बार मुझे दस्त लग गए और मैं डॉक्टर के पास गया। उसने दस्त रोकने के लिए मुझे कुछ अँग्रेज़ी दवाइयाँ दीं। लेकिन मुझे कोई फायदा नहीं हुआ। फिर मैं एक दूसरे डॉक्टर के पास गया जो देशी दवाइयाँ देता था। उसने मुझे आँत और पेट के लिए दवाई दी। दोनों ही डॉक्टरों में से किसी ने भी हेपेटाइटिस की जाँच करवाने के लिए नहीं कहा। मुझे लगातार दस्त होते रहे इसलिए मैं वापस पहले डॉक्टर के पास गया, जिसने मुझे अँग्रेजी दवाइयां दी थीं।' जब डॉक्टर ने मेरे पेट की दाँयी तरफ हलके से थप–थपाया, तो मुझे दर्द हुआ। फौरन उसने मुझे खून जाँच करवाने के लिए कहा। डॉक्टर का शक सही निकला, मुझे हेपेटाइटिस–बी था। यह सुनते ही मेरे पैरों तले ज़मीन खिसक गयी! मैं सोचने लगा, मैंने कभी खून नहीं चढ़वाया, न ही किसी के साथ नाजायज़ संबंध रखे तो फिर मुझे यह बीमारी कैसे हो गयी?"

बीमारी का पता चलने के बाद डक ग्यून की पत्नी, उसके माता–पिता और भाई–बहनों ने भी अपने खून की जाँच करवायी। उन सभी के खून में हेपेटाइटिस–बी से लड़ने वाले वायरस (एंटीबॉडीज़) पाए गए। लेकिन उनके शरीर ने हेपेटाइटिस–बी के वायरस से लड़कर उन्हें खत्म कर दिया था। क्या डक ग्यून को अपने परिवार के किसी सदस्य से यह बीमारी लगी थी? या पूरे परिवार में यह वायरस किसी और से फैला था?इस बारे में पक्के तौर पर कुछ नहीं कहा जा सकता। वैसे भी 35 प्रतिशत मामलों में यह एक राज़ ही बना रहता है कि आखिर यह वायरस आया कहाँ से। पता लगाया गया है कि हेपेटाइटिस–बी एक खानदानी बीमारी नहीं है और पीड़ित व्यक्ति को छूने या उसके साथ खाना खाने से इसके होने की गुंजाइश बहुत कम है। इसके बजाय, हेपेटाइटिस–बी के शिकार व्यक्ति के खून और शरीर के दूसरे तरल, जैसे शुक्राणु, योनि से निकलनेवाला पदार्थ या लार से भी यह दूसरे व्यक्ति में फैल सकता है। यह वायरस कटी त्वचा, घाव या श्लेष्मा की परत (नाक, कान के अंदर की नाज़ुक त्वचा) से खून की नली में जा मिलता है।

कई लोगों को खून चढ़वाने से हेपेटाइटिस–बी हो जाता है, खासकर उन देशों में जहाँ खून में हेपेटाइटिस–बी वायरस की जाँच करने की सुविधा बहुत कम होती है या बिलकुल नहीं होती। हेपेटाइटिस–बी वायरस, एड्स के वायरस के मुकाबले 100 गुना ज़्यादा जल्दी फैलता है। हेपेटाइटिस–बी से संक्रमित खून की छोटी–सी बूँद भी बड़ी घातक हो सकती है। जैसे, रेज़र पर लगे हल्के से खून से भी यह वायरस दूसरों में फैल सकता है। यही नहीं, सूखे हुए खून के दाग में भी यह वायरस एक हफ्ते या उससे ज़्यादा समय तक ज़िंदा रह सकता है।'

हेपेटाइटिस की सही समझ रखिए–

डक ग्यून याद करता है, "जब मेरे काम की जगह पर लोगों को पता चला कि मुझे हेपेटाइटिस–बी है, तो मुझे कोने में एक छोटा–सा ऑफिस दे दिया गया जो बाकियों से दूर था।" इस बीमारी के बारे में सुनकर लोग आम तौर पर इसी तरह पेश आते हैं। क्योंकि उन्हें इस वायरस के फैलने के बारे में गलतफहमी होती है। यहाँ तक कि कुछ समझदार लोग भी हेपेटाइटिस–बी को हेपेटाइटिस–ए समझ बैठते हैं। हेपेटाइटिस–ए बड़ी आसानी से फैलता है, मगर हेपेटाइटिस–बी जितना जानलेवा नहीं होता। यौन–संबंध से भी हेपेटाइटिस–बी वायरस फैल सकता है, इसलिए अच्छा चालचलन रखनेवाले उन लोगों को भी शक की निगाहों से देखा जाता है जिन्हें यह बीमारी होती है।

गलतफहमी और शक की वजह से कई गंभीर समस्याएँ खड़ी हो सकती हैं। मिसाल के लिए, कई जगहों पर लोग बेवजह हेपेटाइटिस–बी वायरस के वाहकों (यानी जिनमें यह वायरस मौजूद होता है) से दूरियाँ बना लेते हैं, फिर चाहे वे जवान हों या बुज़ुर्ग। पड़ोसी अपने बच्चों को उनके साथ खेलने नहीं देते, स्कूल में उन्हें दाखिला नहीं मिलता और मालिक उन्हें नौकरी पर नहीं रखते। भेदभाव के डर से लोग हेपेटाइटिस–बी की जाँच नहीं करवाते या दूसरों से छिपाते हैं कि उन्हें यह बीमारी है। यह सच्चाई छिपाकर कुछ लोग न सिर्फ अपनी सेहत बल्कि अपने परिवारवालों की सेहत भी दाँव पर लगा देते हैं। इसलिए बीमारी का यह खतरनाक सिलसिला पीढ़ी–दर–पीढ़ी चलता रहता है।

यह बीमारी नशीली दवाओं के नशे में लोगों और रक्त संक्रमण के दौरान संक्रमित रक्त पाने वाले लोगों में पाई जाती है। इस बीमारी की संक्रमण और लक्षण 1 से 6 महीने में प्रकट होते हैं।

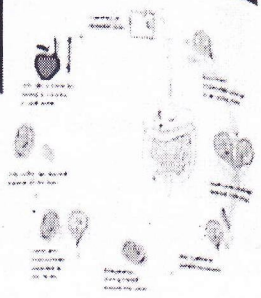

एलोपैथी: बी–कॉम्प्लेक्स, लाइव–52, आराम और पचाने वाला भोजन। सचमुच एलोपैथ में कोई इलाज नहीं है केवल प्रकृति ही इसका काम करती है। कुछ उग्र हेपेटिक विफलता के मामले घातक हैं।

होम्योपैथिक उपचार सीधे तीर की तरह आपको ठीक करे–

होम्योपैथी: होम्योपैथी के माध्यम से एक मामले जिसमें बिलीरुबिन का स्तर 18 मिलीग्राम था।

1. सल्फर 200 के साथ सुबह में केवल एक बार शुरू होती है। दूसरे दिन चॉकोनिया 30; चीन 6, और चेलिडोनियम 30 चक्रीय तरीके से लें
2. तीव्र मामलों में चियोनंथस क्यू + कार्डुस एम क्यू (1:1) 5–8 बूंद नियमित समय के अंतराल में 2–4 घंटे। यह उपचार अल्कोहल के कारण पीलिया में फायदेमंद है।
3. कैंसर के अंतिम चरण में तीव्र जांदी, पुरानी बीमारी, थोश के साथ स्टेमाइटिस, हाइपोकॉन्ड्रिया के लक्षण, हाइड्रास्टिस 30 और चियोनैंथस क्यू बहुत फायदेमंद है।
4. नए पैदा हुए बच्चों में जांडिस: नया जन्म (एक महीने के भीतर) और उसके बाद एक महीने के शिशु जिनकी माताओं को गर्म–भारी भोजन और सूखे फल खिलाया गया था–पॉडोफिलिनम और पलसटिला–6 फायदेमंद है।

Dr. Arvind J. Bhatt
Principal
L.R. Shah Homoeopathy College
Gardi Vidyapith, Anandpar
Rajkot, Gujarat

Homoeopathic Clinical Workshop In Romania
CO-CAN with Homeopathy
CO nquer the CAN cer with Homeopathy
Its Time to Enhance our Clinical Knowledge and Explore the Scenic, Natural Beauty of Eastern Europe
The London College of Homeopathy, UK, and Societatea Romana de Homeopatie (Romania) present
A Two Days Exclusive Clinical Workshop with Dr. Farokh J. Master
Learn and Experience Advanced Homeopathy Skills and Clinical Expertise! Explore the Role of Homeopathy in Cancer, Chronic Diseases, and Terminal IllnessesCase Studies and ConceptsFollow-ups of Live CasesAuxillary Management Tips
And much more....
An Exclusive TWO Days Workshop!
SAVE THE DATES
Join US At Bucharest, Romania on 24th and 25th Nov. 2018
Registration Fee :
For RSH, LCH and SRH Members: GBP 100
For Non-Members: GBP 150
To Reserve Your Seat Visit :
https://lchomeopathy.com/conference/co-can-with-homeopathy/ NOW!
For VISA/Travel Assistance, and Accommodation Packages write to us at info@lchomeopathy.com

New Life Era 4 Bhopal 1, September 2018

Article

Homoeopathic Prophylaxis

Dr. Shivkumari Verma

Dr. Hahnemann's work likes "Friend of health" (1792-1795), "The prevention and cure of scarlet fever (1801), shows his interest in preventive medicine. So from that time concept of homoeopathic prophylaxis come in the field of homoeopathy.

Homeopathic . prophylaxis involves careful selection of individualized remedies either in epidemic or sporadic contagious diseases to treat symptoms. Homeopathic prophylaxis was effective since Hahnemann's time because the basic principle of individualisation was used. Hahnemann used Belladonna and Aconite during two outbreaks of scarletina epidemic in Europe in the early 1800s.

Hahnemann tried to search remedies which produced the same action in a healthy body as in a disease. Both episodes of the epidemics were different, hence Hahnemann individualized epidemic symptoms and found group of remedies that would suit the nature of symptoms in that particular epidemic thus emphasizing on individualisation. In the first epidemic he used Belladonna and in the second epidemic he used Aconite. Thus he proved his point, that no two epidemics should be considered the same and treated in the similar manner since all outbreaks are different and come with different symptoms and intensity.

The selection of a remedy for prophylaxis in a particular epidemic - Genus epidemicus can be done in 3 ways:

1. First way -The use of Nosodes in Prophylaxis.

This approach can be useful before the appearance of genus epidemicus or before the epidemic symptoms are clear. The selection of nosodes for the epidemic treatment is done by using the same disease genus to prepare the nosode that is occurring during a particular epidemic and not through individualisation. This approach has limitations as it offers prophylaxis only for a particular epidemic and not through overall increased immunity to combat diseases

2. The second approach - The select a remedy or group of remedies that have individual epidemic symptoms seen in patients.

This is the same approach that Hahnemann used during scarletina epidemic in Europe, where Belladonna and Aconite were chosen individually for each epidemic of Scarlet fever. The symptoms of scarlet fever that were commonly seen among all patients with very little variability were then selected to find remedies. The common symptoms involved continued fever with delirium, coryza, inflammation of the pharynx with difficulty swallowing, tonsillitis, hoarseness of voice and rash. All these characteristic symptoms of scarlet fever were more distinguished in Belladonna than in the remedies like Arum triphyllum, Allium Cepa, Drosera, Rhus tox which too have some of these symptoms but considering the totality of symptoms Belladonna was selected as a genus remedy. This genus remedy will be more helpful in providing homeopathic prophylaxis than the use of nosodes.

3. The third approach- The treating the patient with constitutional remedies.

This approach works best when the genus epidemicus remedy and the prophylactic nosode remedy fail to provide prophylaxis or to cure. This happens when there is an already existing chronic disease and the vital force is in a morbid state that it does not react to the genus remedy or to any prophylaxis. Thus in such cases a constitutional remedy selected through simillimum and totality of symptoms works effectively.

One can take any of these approaches to cure and prevent the diseases but the treatment will be effective only when a practitioner individualize each and every case, by identifying symptoms of disease as characteristic and pertaining to the unique totality of every individual case.

Dr. Shivkumari Verma
M.D (Hom) Lecturer,
Department of Organon of Medicine L.R. Shah Homoeopathy College
Rajkot (Gujrat)

Article

Homoeopathic Utility in Glaucoma
क्या है ग्लूकोमा या काला मोतिया

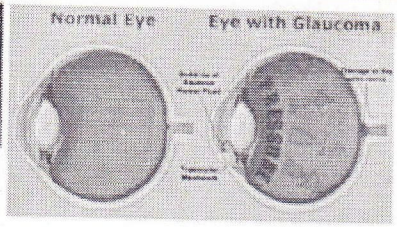

Introduction-Glaucoma is a group of eye conditions that damage the optic nerve, which is vital to good vision. This damage is often caused by an abnormally high pressure in your eye. It can occur at any age but is more common in older adults. The most common form of g00laucoma has no warning signs. The effect is so gradual that you may not notice a change in vision until the condition is at an advanced stage.

ग्लूकोमा को आम भाषा में काला मोतिया कहते हैं। आंख के अंदर अंगों के पोषण के लिए एक तरल पदार्थ उत्पन्न होता है। पोषक के बाद यह तरल पदार्थ आंख के महीन छिद्र (फिल्टर) से बाहर निकलते हैं। उम्र के साथ छिद्र लंग होने शुरू हो जाते हैं। इससे तरल पदार्थ के निकलने की प्रक्रिया थोड़ी बाधित होती है। इससे आंख का प्रेशर बढ़ने लगता है। आंख का बढ़ा प्रेशर ऑप्टिक नर्व (आंखों से दिमाग को सिग्नल भेजने वाली नर्व) को डैमेज करता है। आमतौर पर ऐसा आंखों पर ज्यादा जोर पड़ने से होता है। दरअसल, ऑप्टिक नर्व काफी सेंसिटिव है, इसलिए जरा भी ज्यादा प्रेशर पड़ने पर यह ब्लॉक हो जाती है। इससे दिखना बंद हो जाता है।

Definition-Glaucoma is a disease condition which affects the eyes, especially optic nerve and in most cases is associated with elevated intraocular pressure. Optic nerve is the main nerve of eye, which transmits images from retina of eye to brain, which help us to see those images. Intraocular pressure is the pressure within the eye caused by a nourishing liquid of eye called Aqueous Humor. This liquid is produced and drained by the eyes. But Glaucoma can also happen if this pressure is normal.

Types-The types of glaucoma include the following:

Open-Angle Glaucoma- Open-angle glaucoma is the most common form of the disease. The drainage angle formed by the cornea and iris remains open, but the trabecular meshwork is partially blocked. This causes pressure in the eye to gradually increase. This pressure damages the optic nerve. It happens so slowly that you may lose vision before you're even aware of a problem.

कितनी तरह ग्लूकोमा—ओपन ऐंगल ग्लूकोमाः जब कभी आंख के बढ़े प्रेशर के चलते आंख की ऑप्टिक नर्व खराब हो जाती है और उसके चलते नजर खराब होती है तो उसे ओपन ऐंगल ग्लूकोमा कहा जाता है। यह क्रोनिक है। धीरे धीरे नजर कमजोर होती जाती है। सबसे ज्यादा कॉमन है। इसमें तरल पदार्थ को ड्रेन करने वाली कनैल ब्लॉक हो जाती है जिससे आंख का प्रेशर बढ़ जाता है।

ओपेन एंगल ग्लूकोमा के लक्षण—हलका सिर में दर्द, आंख में भारीपन, नजदीक का धुंधला बार–बार बदलना, बल्ब बुझने के कुछ देर बाद भी नहीं दिखना।

Angle-Closure Glaucoma-Angle-closure glaucoma, also called closed-angle glaucoma, occurs when the iris bulges forward to narrow or block the drainage angle formed by the cornea and iris. As a result, fluid can't circulate through the eye and pressure increases. Some people have narrow drainage angles, putting them at increased risk of angle-closure glaucoma. Angle-closure glaucoma may occur suddenly (acute angle-closure glaucoma) or gradually (chronic angle-closure glaucoma). Acute angle glaucoma is a medical emergency. It can be triggered by sudden dilation of your pupils.

ऐंगल क्लोजर ग्लूकोमाः यह अक्यूट होता है। इसका अचानक अटैक होता है और मरीज को पता चलता है कि उसकी नजर कमजोर हो चुकी है। अटैक के बाद तेज दर्द होता है।

ऐंगल क्लोजर ग्लूकोमा ये है लक्षण—अचानक दर्द होना है, आधे सिर में दर्द होता है, उल्टी आने की आशंका रहती है, अचानक से नंबर कम हो जाता है,

ये रिस्क फैक्टर है तो ग्लूकोमा हो सकता है—परिवार के किसी सदस्य को हुआ हो, यदि युगर के मरीज है तो, माइनेस नंबर है और बार–बार कम हो रहा है, 40वर्ष के उम्र के पार है, अंधेरे में देर से नजर आना, रोशनी में अलग–अलग रंग दिखना, अस्थमा व आथराइटिस जैसे रोगों में लंबे समय तक स्टेरायड्स ले रहे हों, कभी आंख का कोई जख्म हुआ हो या कोई सर्जरी हुई हो, यह बच्चों में भी हो सकता है।

Normal-Tension Glaucoma-In normal-tension glaucoma, your optic nerve becomes damaged even though your eye pressure is within the normal range. No one knows the exact reason for this. You may have a sensitive optic nerve, or you may have less blood being supplied to your optic nerve. This limited blood flow could be caused by atherosclerosis — the buildup of fatty deposits (plaques) in the arteries — or other conditions that impair circulation.

Glaucoma In Children-It's possible for infants and children to have glaucoma. It may be present from birth or developed in the first few years of life. The optic nerve damage may be caused by drainage blockages or an underlying medical condition.

Pigmentary Glaucoma-In pigmentary glaucoma, pigment granules from your iris build up in the drainage channels, slowing or blocking fluid exiting your eye. Activities such as jogging sometimes stir up the pigment granules, depositing them on the trabecular meshwork and causing intermittent pressure elevations.

Causes-Glaucoma is the result of damage to the optic nerve. As this nerve gradually deteriorates, blind spots develop in your visual field.

Elevated eye pressure is due to a buildup of a fluid (aqueous humor) that flows throughout your eye. This fluid normally drains into the front of the eye (anterior chamber) through tissue (trabecular meshwork) at the angle where the iris and cornea meet. When fluid is overproduced or the drainage system doesn't work properly, the fluid can't flow out at its normal rate and pressure builds up. In some people, scientists have identified genes related to high eye pressure and optic nerve damage.

Symptoms-The signs and symptoms of glaucoma vary depending on the type and stage of your condition. For example:

Open-angle glaucoma--Patchy blind spots in your side (peripheral) or central vision, frequently in both eyes,Tunnel vision in the advanced stages

Acute angle-closure glaucoma--Severe headache, Eye pain,Nausea and vomiting, Blurred vision, Halos around lights, Eye redness

If left untreated, glaucoma will eventually cause blindness. Even with treatment, about 15 percent of people with glaucoma become blind in at least one eye within 20 years.

Homoeopathic Remedies Phosphorus-ne of the top remedies remedies for Glaucoma .It is also indicated for Glaucoma when the optic nerve is damaged (atrophied). The main symptom guiding the use of this Homeopathic remedy is tiredness of eyes all the time. The eyes seem very tired even when they are not engaged in much work. The eyes seem to be exhausted. Along with the fatigue of eyes, the vision is blurred and the patient feels that every object is under the cover of dust when he or she looks at it. Halos around light is also an important symptom. Another key symptom is the slightly improved vision by shading the eyes with hands. By doing this, the objects that look blurred seem somewhat clear. Homeopathic medicine Phosphorus helps in improving the eyesight and the fatigue of eyes.

Comocladia-Amongst the homeopathic remedies for Glaucoma with pain , Comocladia is indicated in patients, who experience a fullness sensation in eyes. The fullness is mostly accompanied by pain in eyes. The eyes feel very enlarged. The eye pain gets worse by warmth and such a person feels relief in pain and eye fullness in open air.

Belladonna-Belladonna is the best for acute symptoms in a patient of Glaucoma. The main symptoms include sudden increase in dimness of vision. The eyes appear red. This is accompanied by a severe pain in eyes and head. The pain is very violent in character. Nausea and vomiting may also occur.

Osmium -Osmium is of great help in improving dim vision. The intraocular pressure is raised in persons needing Osmium. The important symptom listed by the patient is the display of various changeable colours of an object when looked at from different angles like a rainbow (iridescent vision). The patient may also have intolerance to light.

Physostigma -An effective remedy following injury. The symptoms may be dim vision, blurring of vision or partial blindness. Along with dim vision, the patient may suffer from pain in eyes. The pain is usually worse after using the eyes. Patients of Glaucoma with myopic condition also respond well to this Homeopathic medicine.

Spigelia - Severe headache on the left side. The pains are sharp and stabbing through the eye and head, worse on motion and at night.

Colocynthis- Colocynthis is considered a good remedy for glaucoma. There is pain in the eye balls before glaucoma has set in. Sensation as if the eye balls would fall out. When the pain travels to the head and is better by pressure. It acts as a good palliative

Prunus Spinosa -Prunus Spinosa is the ideal l Homeopathic medicine for treatment of sudden pain in right eye as a result of Glaucoma. Prunus Spinosa works mainly for right eye pain. Pain in eye is so acute and violent that it results in a bursting sensation in the eyeball.

Cedron-In contrast to Prunus Spinosa, the action of Homeopathic medicine Cedron is centered on the left eye of a Glaucoma patient. Cedron is the ideal remedy for severe, violent pain in the eye, especially left eye. The onset of pain may show certain periodicity in its occurrence. The pain may show radiation to the nose.

Gelsemium - Gelsemium is also a very effective remedy for glaucoma .There is dilatation of pupils , disturbed accommodation , pain in the eyes, with or without lachrymation.

Conium Mac- Sensation of pressure in the eyes when reading , writing or doing any fine work

Escerinum - It is considered a good remedy for glaucoma . There is dilatation of pupils with hardening of eye balls.

Case Of Glaucoma Treated With Homoeopathy-A male of 45 years visited my clinic for his complaints of eye problems such as weak sightedness and blurring of vision and the peculiarity in his complaint was that he could see smoke like structure around the objects. Sometimes he would see things double though they are not in two. (double vision) On general examination and interro gation, he said he desires very cold water for drinking and vomits it out. He was tall lean and thin. In past history he had gastritis.

Discussion-From the description of sign symptoms of patient it seemed that **Phosphorus** is the similimum of the patient. We know phosphorus is indicated in various eye conditions like cataract, diplopia, conjunctivitis, glaucoma ,etc. also from the sign and symptoms it was observed that these complaints belongs to atrophic conditions and dryness of optic nerve and phosphorus is the best remedy for that. With very few doses of Phosphorus 200 the patient got normal vision which he could not be able to achieve evenafter consulting three to four ophthalmologists. All wonders and thanks to homoeopathy.

40 के बाद रुटीन चेकअप कराएं—40 साल की उम्र के बाद ग्लूकोमा होने के चांस बढ़ जाते हैं। 40 की उम्र के बाद आंखों का रेगुलर चेकअप कराते रहें। हो सकता है इस उम्र के लोगों को लगे कि उनकी नजर मोतियाबिंद की वजह से कमजोर हो रही है, लेकिन हो सकता है कि नजर की कमजोरी ग्लूकोमा की वजह से हो। ऐसे में सलाह यह है कि 40 की उम्र के बाद आंखों का रुटीन चेकअप कराते रहें।

खुद से जांचें अपनी आंख—इस उदाहरण से समझें। अपनी आंख से किसी एक चीज को देखें। मान लिजिए पार्क में एक बच्चा बैठा है। बच्चे के एक तरफ हाथी का खिलौना है और दूसरी तरफ शेर का खिलौना है। हाथी और शेर के साथ एक–एक कुर्सी है। कुर्सी के साथ पेड़ पौधे। यदि आप की आंख ठीक है तो आपको बच्चा भी दिखेगा, हाथी–शेर भी दिखेंगे और पेड़–पौधे। यदि ग्लूकोमा के आप करीब है तो आपको बच्चे के साथ हाथी और शेर दिखेंगे। कुर्सियां नहीं। यदि ज्यादा करीब है तो सिर्फ आपको बच्चा दिखेगा। हाथी और शेर नहीं। विशेषज्ञों के मुताबिक ग्लूकोमा में फील्ड आफ विजन यानी नजर का दायरा सिकुड़ता है। जब ग्लूकोमा हो जाएगा तो आपको बच्चा भी नहीं दिखेगा। आखों को पोषण देने वाले तत्वों जैसे बादाम, दूध, संतरे का जूस, खरबूजे, अंडा, सोयाबीन का दूध, सूरजमुखी आदि को ज्यादा मात्रा में सेवन कीजिए।

घरेलू उपाय (उपचार)—आंखों में तेजी से ठन्डे पानी के छींटे मारें। यह आंखों के रक्त संचार को बढ़ाता है और दबाव को हटाता है।

Dr. Bhaskar J. Bhatt,
Shri L.R. Shah Homoeopathic Medical College, Rajkot
Mangalam Clinic. 80 Feet Road, Sahkar Main Road, Rajkot, Gujarat
A well known physician of Rajkot
Mob: 9374107362

NEW LIFE ERA AUGUST - 2018

Homoeopathic Approach In De-addiction of Alcoholism

Dr. Shivkumari Verma

Alcoholism is one of the major health issues in developing countries, one of which is India. Not only the society but the whole family is disturbed at once with direct effect on upbringing of children. The alcoholism is characterized by craving for alcohol which leads to the mental imbalance with loss control over self in turn physical dependence. The people with severe failure in life or loss of ambitions become habitual in alcohol drinking, as alcohol gives the feel of good compound to them with loss of short time memory.

Alcohol withdraw effects- When alcohol consumption is stopped too abruptly, the person's nervous system suffers from uncontrolled synapse firing. This can result in symptoms that include anxiety, life threatening seizures, delirium tremens, hallucinations, shakes and possible heart failure.

Significant alcohol intake produces changes in the brain's structure and chemistry, though some alterations occur with minimal use of alcohol over a short term period, such as tolerance and physical dependence. These changes maintain the person with alcoholism's compulsive inability to stop drinking and result in alcohol withdrawal [illegible] general, problem drinking is considered alcoholism when the person continues to drink despite experiencing social or health problems caused by drinking.

Sign and Symptoms of Alcohol Poisoning

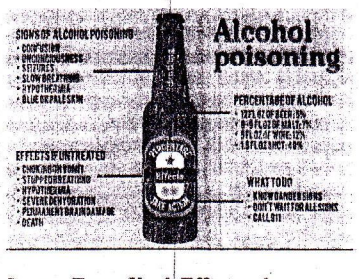

Long –Term Used Effects of Alcohol

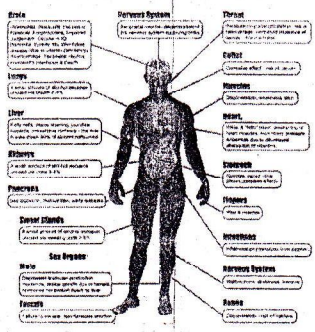

Psychiatric Disorders Due to Long-Term Used of Alcohol

Psychiatric disorders are common in alcoholics, with as many as suffering severe psychiatric disturbances. The most prevalent psychiatric symptoms are anxiety and depression disorders. Psychiatric symptoms usually initially worsen during alcohol withdrawal. Psychosis, confusion, and organic brain syndrome may be caused by alcohol misuse, which can lead to a misdiagnosis such as schizophrenia. Panic disorder can develop or worsen as a direct result of long-term alcohol misuse.

The social skills that are impaired by alcohol abuse include impairments in perceiving facial emotions, prosody perception problems and theory of mind deficits; the ability to understand humour is also impaired in alcohol abusers.

Men with alcohol-use disorders more often have a co-occurring diagnosis of narcissistic or antisocial personality disorder, bipolar disorder, schizophrenia, impulse disorders or attention deficit/hyperactivity disorder. Women with alcoholism are more likely to have a history of physical or sexual assault, abuse and domestic violence than those in the general population, which can lead to higher instances of psychiatric [illegible] dependence on alcohol.

Homeopathic Therapeutics For Alcoholism

The following remedies may be more useful where they are supported by accessory symptoms as per aphorisms 94 and 95 and footnotes to aphorisms 128 and 235 and the remedy administered and repeated as per the instructions given By the Master Hahnemann in the last Organon and highlighted by Dr. Pierre Schmidt

•Capsicum: in 10 drop doses of the tincture will stop the morning vomiting, sinking at the pit of the stomach and intense craving for the alcohol in dipsomania.

•Ferrum Phosphoricum: Craves brandy.

•Lachesis: Ill-natured, inclined to violent crimes, vindictive, wicked, jealous, envious, and induced to kill others and not himself. Talkative, before and during drunkenness.

•Angelica: IN 15 drop doses of the tincture, three times a day has caused disgust for liquor.

• Avena Sativa: Mental symptoms from Morphine or Opium. Alcohol and Heroin addictions. Opium, Morphine addictions. This is a specific remedy for drug addiction. It is a sedative and tonic par excellence for depletions. It is good for loss of initiative and will, to get well and one will resume one" daily work.

•Cannabis Indica: A very reliable remedy in acute alcoholism. Some violence, talkative and active mind; subjects crowd upon it, delusions and hallucinations related to exaggerated subjects, time, space, etc.; face flushed, pupils dilated, perspires easily. Surprise is constantly expressed on Hyoscyamus: When delirium tremens occurs this is usually one of the first remedies indicated. The delirium is constant with loquaciousness, rarely inflammatory enough for Belladonna or maniacal enough for Stramonium; the pulse is small, and quick and compressible, the skin is cold and clammy, the patient is tremulous and picks constantly at objects in the air. Marked sexual excitement, desire to expose self and fear of poison. The visions are those of persecution, are terrifying, and the patient makes efforts to escape.

•Dr. Butler says that for the production of sleep no remedy compares with Hyoscyamus in [illegible] half glass of water, and teaspoonful doses given half-hourly.

•Nux vomica: Nux is the great anti-alcoholic remedy. It corresponds to the tremor, to the nervous affections, to the headache, to the bad taste. It also corresponds to delirium tremens, where every little noise frightens and the victim finds no rest any place, springs up at night and has frightful visions. The tremor is marked with ugliness and irritability and gastric disturbance. It is the remedy for the acute results of a spree; the morning big head is often large enough for the Nux cap and the "rich brown" taste corresponds beautifully. It is a remedy to be given while the patient is still under the influence of liquor or any of the stages of alcoholism. Agaricus will sometimes control the characteristic tremor when Nux fails.

•Opium: This is a remedy indicated in "old sinners" who have had delirium tremens over and over again. There is a constant expression of fright or terror, they have visions of animals springing up everywhere, they see ghosts, the sleep is uneasy, the breathing is stertorous. It is especially indicated in those cases simulating apoplexy.

•Lachesis has visions of snakes and hideous objects. It has a choking sensation in throat, which awakens suddenly from sleep. Stramonium is suitable in habitual drunkards. The prevailing mental characteristic is terror; all hallucinations and illusions are fright and terror producing. It has visions of animals coming at him from every corner and he tries to escape. The face of Stramonium is bright red, not dark red as in Opium. Arsenic has visions of ghosts, with great weakness; diseases from overuse of alcohol; patients must have their accustomed drinks; great tremulousness and nervous weakness. Suicidal tendency, constantly annoyed by bugs and vermin that he sees upon his person and unceasingly tries to brush them off.

•Belladonna, too has delirium with visions of rats, mice, etc., and so has Calcarea carbonica. Belladonna is easily distinguished from Opium, and Calcarea comes in as a last resort after Belladonna and Stramonium have ceased to do well.

•Ranunculus bulbosus given in the tincture has been found to be most calming in attacks of delirium tremens. It is undoubtedly one of our best remedies in the treatment of acute alcoholism. Phosphorus sees faces peering at him from [illegible]

•Cimicifuga is useful in cases that are mentally depressed and tremor is a prominent symptom. The delirium is mild and the hallucinations of sight relate to small objects; there is persistent sleeplessness and physical restlessness. Avena sativa is a valuable remedy in alcoholism where the victim is nervous and

sleepless almost to the point of delirium tremens. It is also a useful remedy in the opium and cocaine habits. Strophanthus has also been successfully used.

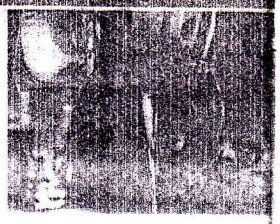

•Pulsatilla: It is a better antidote to whisky than even Nux vomica.

•Spiritus glandium quercus: It is a good remedy as an antidote to the effects of alcohol. It will frequently cause disgust for the alcoholic beverages.

•Sulphuric acid: This is a remedy for chronic alcoholism. It corresponds to inebriates on their last legs, who are pale and shriveled and cold, whose stomach will not tolerate the slightest amount of food. They can't drink water unless mixed with whiskey. They are quick and hasty in everything, and have a constant craving for brandy. It suits the sour breath and vomiting of alcoholic dyspepsia. It comes long after the Nux vomica stage.

Treatment Helps-But Does Not Cure- ***This tagline is very important because without support of family and care-person, without sympathy for the sufferer, without [illegible] sufferer, the permanent solution of alcoholism is not possible. So that it is the challenge for doctor and family too.***

Dr. Shivkumari Verma
M.D. (Hom), Lecturer,
Dept. Oranon of Medicine
L.R. Shah Homoeopathy
College, Rajkot (Gujrat)

Cases of Renal Calculi Treated With Single Dose

Dr. Muktinder Singh

Case 1- A young man around 40 years presented with severe renal colic. Last evening was to be given painkiller injection now again severe on examination, pain location is on right renal region up to anterior part of lower abdomen only up to the bladder the sensation is of cutting as if something is cutting from inside concomitant of pain is nausea intensifies with pain and leads to vomiting Combined, Kidneys; PAIN; cutting; ureters; with vomiting (1) OCI, after giving medicine pain relieved in few hours another case of male 28 years having a huge stone in the kidney and having a tendency to pass lots of stone used to pass calculi every month presented with severe pain in bladder extending to penis meatus the pain was dragging type. when referred to repertory Combined, Urethra; PAIN; dragging; extend to tip; evening (1) sabad. a single dose of sabadilla not only relieved pain but also eased in the passing of calculus The tendency of forming of calculus also decreased a lot.

Dr. Muktinder Singh, M.D.
Homoeo CARE Ludhiana,
SCO 12 A Model Town
Extension Market. Near Krishna
Mandir Ludhiana
Mobile+919815127201
Ph.: 0161-4646000,
4646044, 4632321